International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 399-400

भारतीय संस्कृति और शाश्वत जीवन मूल्य

Dr. Nirmal Singhroha

Assistant Professor in Hindi, Keshav College of Education, Salwan, Karnal, Haryana, India

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी कहा जाता है। जीने की कला हो या विज्ञान और राजनीति का क्षेत्र, भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ–साथ नष्ट होती रही हैं, किन्तु भारत की संस्कृति आदिकाल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर–अभर बनी हुई है।

संस्कृति

संस्कृति शब्द संस्कार से बना है। शाब्दिक अर्थ में सांस्कृति का अर्थ है : सुधारने वाली या परिण्कार करने वाली। यजुर्वेद में संस्कृति को सृष्टि माना गया है। जो विश्व में वरण करने योग्य है, वहीं संस्कृति है।

डॉ0 नगेन्द्र ने लिखा है कि, ''संस्कृति मानव जीवन की वह अवस्था है, जहाँ उसके प्राकृत राग द्वेषों का परिमार्जन हो जाता है। इस तरह जीवन को परिण्कृत एवं सम्पन्न करने के लिए मूल्यों, स्थापनाओं, और मान्यताओं का समूह संस्कृति है। किसी भी देश की संस्कृति अपने आप में समग्र होती है। इससे उसका अंतः एव बाल स्वरूप स्पष्ट होता है। संस्कृति परिवर्तनशील है। यही कारण है कि एक काल के सांस्कृतिक रूपों की तुलना दूसरे काल से तथा दूसरे काल के सांस्कृतिक रूपों की अभिव्यक्तियों की तुलना नहीं करनी चाहिए, न ही एक दूसरे को निकृष्ट एवं श्रेष्ट बताना चाहिए।

एक मानव सामाजिक प्राणी बनाने में जिन तत्त्वों का योगदान होता है, वही संस्कृति है। निष्कर्ष रूप में मानव कल्याण में सहायक सम्पूर्ण ज्ञानात्मक, क्रियात्मक, विचारात्मक गुण संस्कृति कहलाते हैं। संस्कृति में आदर्शवादिता एवं संक्रमणवादिता होती है।

सभ्यता को शरीर एवं संस्कृति को आत्मा कहा गया है; क्योंकि सभ्यता का अभिप्राय मानव के भौतिक विकास से है जिसके अन्तर्गत किसी परिष्कृत एवं सभ्य समाज की वे स्थूल वस्तुएं आती हैं, जो बाहर से दिखाई देती है, जिसके संचय द्वारा वह औरों से अधिक उन्नत एवं उच्च माना जाता है। उदाहरणार्थ रेल, मोटर, सड़क, वायुयान, सुन्दर, वेशभूषा, मोबाईल।

संस्कृति के अन्तर्गत वे आन्तरिक गुण होते हैं, जो समाज के मूल्य व आदर्श होते हैं, जैसे – सज्जनता सहृदयता, सहानुभूति, विनम्रता और सुशीलता।

सभ्यता और संस्कृति का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है; क्योंकि जो भौतिक वस्तु मनुष्य बनाता है, वह पहले तो विचारों में जन्म लेती है जब कलाकार चित्र बनाता है, तो वह उसकी संस्कृति होती है। सभ्यता और संस्कृति एक–दूसरे के पूरक है।

जो सभ्य होगा, वह सुसंस्कृत होगा ही। सभ्यता और संस्कृति का कार्यक्षेत्र मानव समाज है।

डॉ0 गुलाबराय के विचारों में

''भारतीय संस्कृति में एक संश्लिष्ट एकता है। इसमें सभी संस्कृतियों का रूप मिलकर गंगा में मिले हुए, नदी–नालों के जी की तरह (गांगेय) पवित्र रूप को प्राप्त करता है। भारतीय संस्कृति की अखण्ड धारा में ऐसी सरिताएं है, जिसका अस्तित्व कहीं नहीं दिखाई देता। इतना सम्मिश्रण होते हुए भी वह अपने मौलिक एवं अपरिवर्तित रूप में विद्यमान है।''

पूरे विश्व में भारत अपनी संस्कृति और शाश्वत मूल्यों के लिए प्रसिद्ध देश है। यह भूमि विभिन्न संस्कृति व परम्परा के लिए हुए है। भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व अच्दे शिष्टाचार, तहज़ीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएं और मूल्य आदि है।

आज यदि हम विश्वस्तरीय जीवन शैली की बात करे तो हरेक की जीवन शैली आनुनिक हो रही है, भारतीय लोग आज भी अपनी परम्परा और मूल्यों को बनाए हुए है। विभिन्न संस्कृति और परम्परा के लोगों के बीच की घनिष्ठता ने एक अनोखा देश, 'भारत' बनाया है।

''विविधता में एकता'' का कथन यहाँ पर आम है। इस देश में विभिन्न धर्मों, जाति, भाशा, रीति–रिवाजों, खाने की आदत के तरीके से अलग हैं फिर भी वो एकता के साथ रहते हैं।

भारत की राष्ट्रीय भाषा हिन्दी है हालाँकि विभिन्न राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में लगभग 22 अधिकारिक भाषा और 400 दूसरी भाषाएं रोज बोली जाती है। इतिहास के अनुसार, हिन्दू और बुद्ध धर्म जैसे धर्मों की जन्म स्थली के रूप में भारत को पहचाना जाता है। भारत की अधिसंख्य जनसंख्या हिन्दू धर्म से सम्बन्ध रखती है। हिन्दू धर्म की दूसरी विविधता शैव, शक्त्य, वैष्णव और स्मार्ता है।

भारतीय संस्कृति में आज भी हमें वो शाश्वत जीवन शैली देखने को मिलती है जो लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व अपने अस्तित्व में आई, भारत की संस्कृति में सबकुछ है जैसे विरासत के विचार, लोगों की जीवन शैली, मान्यताएं, रीति–रिवाज, मूल्य–आदतें, परवरिश, विनम्रता, ज्ञान आदि।

भारत विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता है जहां लोग अपनी पुरानी संस्कृति और परवरिश का अनुकरण करते हैं। संस्कृति दूसरों के व्यवहार करने, सौम्यता से चीजों पर प्रतिक्रिया करने का, मूल्यों के प्रति हमारी समझ का, न्याय, सिद्धांत और मान्यताओं को मानने का तरीका है। पुरानी पीढ़ी के लोग अपनी संस्कृति और परम्पराएं पहले से ही नयी पीढ़ी को सौंपते हैं। इसलिए सभी बच्चे यहां पर अच्छे से व्यवहार करते हैं, क्योंकि उनको ये संस्कृति और परम्परा उनके माता–पिता और दादा–दादी से मिली होती है। हम भारतीय संस्कृति की झलक सभी चीज़ों में देख सकते हैं, जैसे; नृत्य, संगीत, कला, व्यहवार, सामाजिक, नियम, भोजन, हस्तशिल्प, वेशभूषा आदि।

ऐसा माना जाता है कि यहाँ वेदों से हिन्दू धर्म का आरम्भ हुआ है। हिन्दू धर्म के सभी पवित्र धर्मग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं। ये भी माना जाता है कि जैन धर्म का आरम्भ

प्राचीन समय से है और इसका अस्तित्व सिन्धु घाटी में था। बुद्ध एक दूसरा धर्म है। जिसकी उत्पत्ति भगवान बुद्ध की शिक्षा के बाद अपने देश में हुई है। इसी तरह हम अन्य धर्मों की उत्पत्ति भी यहाँ प्राचीन समय से सुनते आ रहें हैं।

कई सारे युग आये और गये लेकिन कोई भी इतना प्रभावशाली नहीं हुआ कि वो हमारी वास्तविक संस्कृति को बदल सके। नाभिरज्जु के द्वारा पुरानी पीढ़ी की संस्कृति नयी पीढ़ी से आज भी जुड़ी हुई है।

आध्यात्मिकता

आध्यात्म भारतीय संस्कृति का प्राण है। आध्यात्मिकता ने भारतीय संस्कृति के किसी भी अंग की अछूता नहीं छोड़ा है। पुनर्जन्म एवं कर्मफल के सिद्धान्त में जीवन की निरन्तरता में भारतीयों का विश्वास दृढ़ किया है और अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष के चार पुरूषार्थों को महत्त्व दिया गया है।

सहिष्णुता की भावना

भारतीय संस्कृति की विशेष महत्वपूर्ण भावना यदि है तो वह सहिष्णुता की भावना। भारतीयों ने अनेक आक्रमणकारियों के अत्याचारों को सहन किया है। भारतीयों की सहिष्णुता का शिक्षा राम, बुद्ध, महावीर, कबीर, नानक, चैतन्य महात्मा गांधी आदि महापुरूषों ने दी।

कर्मवाद

''सर्वत्र करणीय'' वह कर्म करने की प्रेरणा दी है। गीता में ''कर्मण्येवाधि–काररते मां फलेषु कदाचन'' पर बल दिया गया है। अर्थववेद में; कर्मण्यता मेरे दायें हाथ में है, तो विजय निश्चित ही मेरे बायें हाथ में होगी।''

विश्वबंधुत्व

भारतीय संस्कृति सारे विश्व को एक कुटुम्ब मानते हुए समस्त प्राणियों के प्रति कल्याण, सुख एवं आरोग्य की कामना करती है।

''सर्वे भद्राणी सुखिनः संतु सर्वे निरामयाः।
सर्वे भद्राणी पश्यंतु मां कश्चित् दुःखमायुयात।।

समन्वयवादिता

यहां के ऋषि, मनीषी, महर्षियों व समाज सुधारकों ने सदैव समन्वयवादिता पर बल दिया है। भारतीय संस्कृति की यह समन्वयवादिता बेजोड़ है।

''अनेकता में एकता''
''भोग में त्याग''

ये समन्यवाद के ही उदाहरण है।

जाति एवं वर्णाश्रम व्यवस्था

भारतीय संस्कृति में वर्णाश्रम एवं जाति–व्यवस्था श्रम विभाजन की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण थी। यह व्यवस्था गुण व कर्म पर आधारित थी, जन्म पर नहीं। 100 वर्ष के कल्पित जीवन को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वनप्रस्थ, सन्यास के अनुसार बांटा गया। यह व्यवस्था समाज में सुख–शान्ति व सन्तोष की अभिवृद्धि में सहायक थी।

संस्कार

भारतीय संस्कृति में संस्कार समाज में शुद्धि की धार्मिक क्रियाओं से सम्बन्धित थे। इन अनुष्ठानों का महत्व व्यक्तियों के मूल्यों, प्रतिमानों एवं आदर्शों को अनुशासित व दीक्षित रखना होता है।

गुरू की महत्ता

भारतीय संस्कृति में गुरू को महत्त्व देते हुए उसे सिद्धिदाता, कल्याणकर्ता एवं मार्गदर्शक माना गया है। गुरू का अर्थ है : अन्धकार का नाश करने वाला।

शिक्षा को महत्व

भारतीय संस्कृति में शिक्षा की पवित्रतम प्रक्रिया माना गया है, जो बालकों को चारित्रिक, मानसिक, नैतिक आध्यात्मिक विकास करती है।

राष्ट्रीयता की भावना

भारतीय संस्कृति में राष्ट्रीयता की भावना को : ''जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादीप गरीयसी'' कहकर इसकी वन्दना की गई है।

आशावादिता

भारतीय संस्कृति शाश्वत जीवन मूल्यों को बढ़ावा देती हुई आशावादी दृष्टिकोण अपनाए हुए है। वह निराशा का प्रतिवाद करती है।

स्थातित्व

यूनान, मिश्र, रोम, बेबीलोनिया की संस्कृति अपनी चरम सीमा पर पहुँच कर नष्ट हो गयी है। जबकि भारतीय संस्कृति अनेक झंझावातों को सहकर आज भी शाश्वत है, जीवित है।

अतिथि देवो भव

अतिथि सम्मान हमारी भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है जोकि विश्वविख्यात है। हमारे देश में अतिथि को देवता समान माना जाता है।

हमारी राष्ट्रीय संस्कृति हमेशा हमें अच्छा व्यवहार करना, बड़ों की इज्जत करना, मजबूर लोगों की मदद करना और गरीब और जरूरत मंद लोगों की मदद करना सिखाती है। ये हमारी धार्मिक संस्कृति है कि हम व्रत रखे, पूजा करें, गंगा जल अर्पण करें, सूर्य नमस्कार करें, परिवार के बड़ों के पैर छुएं, रोग ध्यान और योग करें भूखे और अक्षम लोगों को अन्न–जल दें।

हमारे राष्ट्र की संस्कृति महान है। भारतीय संस्कृति आज भी अपनी विशेषताओं के कारण विश्वविख्यात है। अपने आदर्शों पर चलने के कारण भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्य शाश्वत है। चाहे धर्म हो या कला या भाषा, भारतीय संस्कृति ने सभी देशी–विदेशी संस्कृतियों को अपने में समाहित कर लिया।

जिस तरह समुद्र अपने में विभिन्न नदियों के जल को एकाकार कर युगों से अपने आपको शाश्वत किए हुए है, भारतीय संस्कृति इसका एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

संदर्भ सूचि

1. स्वतत्रंता और संस्कृति : सर्वपल्ली राधकृष्णन ISBN 9788190183789.
2. वैदिक संस्कृति : गोविन्द चन्द्र पाण्डे लोकभारती प्रकाशन।
3. ब्राहाण विश्वकोश 2008, ब्रिटेनिका विश्वकोश।
4. 'Meaning of "Culture" Cambridge English Dictionary.